# वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का, घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 22 253 अंक : 1

## प्रवचनसार पद्यानुवाद

### ज्ञानतत्त्वप्रज्ञापन महाधिकार

**नरपती सुरपति असुरपति इन्द्रियविषयदवदाह से।**
**पीड़ित रहें सह सके ना रमणीक विषयों में रमें।।६३।।**
**पंचेन्द्रियविषयों में रती वे हैं स्वभाविक दु:खीजन।**
**दु:ख के बिना विषविषय में व्यापार हो सकता नहीं।।६४।।**
**इन्द्रिय विषय को प्राप्त कर यह जीव स्वयं स्वभाव से।**
**सुखरूप हो पर देह तो सुखरूप होती ही नहीं।।६५।।**
**स्वर्ग में भी नियम से यह देह देही जीव को।**
**सुख नहीं दे यह जीव ही बस स्वयं सुख-दुखरूप हो।।६६।।**
**तिमिरहर हो दृष्टि जिसकी उसे दीपक क्या करे।**
**जब जिय स्वयं सुखरूप हो इन्द्रिय विषय तब क्या करें।।६७।।**
**जिसतरह आकाश में रवि उष्ण तेजरु देव है।**
**बस उसतरह ही सिद्धगण सब ज्ञान सुख अर देव हैं।।६८।।**
**प्राधान्य है त्रैलोक्य में ऐश्वर्य ऋद्धि सहित हैं।**
**तेज दर्शन ज्ञान सुख युत पूज्य श्री अरिहंत हैं।।•**
**हो नमन बारम्बार सुरनरनाथ पद से रहित जो।**
**अपुनर्भावी सिद्धगण गुण से अधिक भव रहित जो।।•**

• आचार्य जयसेन की टीका में प्राप्त गाथा

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

## निर्वाण महोत्सव

यद्यपि निर्वाण महोत्सव भी खुशी का महोत्सव है; क्योंकि यह आत्मा की सर्वोच्च उपलब्धि का दिन है; तथापि इस खुशी में चंचलता, खेलकूद, बढ़िया-बढ़िया खानपान आदि को कोई स्थान नहीं है; क्योंकि वह भगवान के संयोग का नहीं, वियोग का दिन है।

अबतक उनकी दिव्यध्वनि का लाभ सभी को प्राप्त हो रहा था। अब सभी भक्तजन इस लाभ से वंचित हो गये हैं। हम उन लोगों की कल्पना करें, जो भगवान की दिव्यध्वनी प्रतिदिन सात-सात घंटे सुनते थे, पर आज सब अनाथ हो गये हैं। उनकी मन:स्थिति में अपने को रखकर हम देखें तो हमें यह आभास हो सकता है कि निर्वाणमहोत्सव का क्या रूप होना चाहिए ?

आज का दिन गंभीर चिंतन का दिन है, अपने पैरों पर खड़े होने का दिन है, अबतक जो कुछ भी सुना है, समझा है; उसे जीवन में उतारने के संकल्प करने का दिन है।

मोक्ष याने मुक्त होना। दु:खों से, विकारों से, बंधनों से मुक्त होना ही मोक्ष है। मोक्ष आत्मा की अनन्त-आनन्दमय अतीन्द्रियदशा है। अबाधित अनन्त आनन्दमय होने से मोक्ष ही परमकल्याणक स्वरूप है।

इस मोक्ष की प्राप्ति के वांछक होने के कारण ही हम सब मुमुक्षु कहलाते हैं। यह मोक्ष ही अन्तिम साध्य है, सम्पूर्ण धर्माराधना इस मुक्ति की प्राप्ति हेतु ही होती है।

मुक्ति प्राप्त हो गई, इसकारण उनकी सर्व धर्माराधना आज सफल हो गई है, उन्होंने पुरुषार्थ का अन्तिम फल प्राप्त कर लिया है। चार पुरुषार्थों में अन्तिम पुरुषार्थ मोक्ष ही है, उसे प्राप्त कर लेने से उनकी सम्पूर्ण साधना सफल हो गई है। इसी का यह पावन महोत्सव है।

**ह्न पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव, पृष्ठ : 73-74**

## ज्ञानी को परिषहों का वेदन नहीं

पूज्यपाद आचार्य श्री देवनन्दि के प्रसिद्ध ग्रन्थ इष्टोपदेश के 24 वें श्लोक पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरसगर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। मूल श्लोक इसप्रकार है –

**परीषहाद्यविज्ञानादास्रवस्य निरोधिनी।**
**जायतेऽध्यात्मयोगेन कर्मणामाशु निर्जरा ।।२४।।**

अध्यात्मयोग से अर्थात् आत्मा का आत्मा के साथ जुड़ान होने से ज्ञानी जीव को परीषहादिक का वेदन (अनुभव) नहीं होता है; जिससे कर्मों के आस्रव को रोकनेवाली निर्जरा उस जीव को होती है।

**( गतांक से आगे .....)**

ज्ञानी जीव जितना स्वभाव का आश्रय करता है, उसे उतना संवर व उतनी निर्जरा प्रगट होती है और जितना परद्रव्यों का आश्रय लेता है, उतना उसे आस्रव-बंध होता है। यह उपदेश ही इष्टोपदेश है। परद्रव्य के आश्रय से लाभ होगा ह्न ऐसा माननेवाला उपदेश तो अहितकर उपदेश है। परद्रव्य या परभाव आत्मा को साधने के साधन नहीं हैं। भगवान आत्मा शुद्धस्वरूप आप स्वयं ही साध्य है और आप स्वयं ही साधन है।

यह एकमात्र योग्य बात है। अमीर हो या गरीब दोनों के लिए धर्म का मार्ग कोई जुदा-जुदा नहीं है, एक ही है।

यहाँ धर्मीजीव को ध्यान की बात समझाते हुए आचार्य आत्मानुशासन के आधार से कहते हैं कि ह्न जिनके पुण्य-पाप कर्म फल दिये बिना स्वयमेव गल जाते है ह्न वे योगी हैं। फल दिये बिना का तात्पर्य यह है कि मुनिराज तो उससमय शुद्धोपयोग में लीन होने से कर्म के उदयकाल में उससे जुड़ते नहीं हैं और कर्म उदय में आकर खिर जाते हैं।

इसप्रकार पूर्ण शुद्धता में लीन योगी को तत्काल ही निर्वाण की प्राप्ति होती है। उसे कर्मों का आस्रव नहीं होता है। यह तो तद्भव मोक्षगामी की बात है; लेकिन जिसे इस भव में मोक्ष नहीं होगा, उस योगी को अशुभ कर्मों की निर्जरा होती है तथा जितना शुभविकल्प है, उतने प्रमाण में शुभकर्मों का आस्रव भी अवश्य होता है।

आत्मा शुद्ध सत् चिदानन्दस्वरूप है। अनंतज्ञान, अनंतदर्शन, अनंतआनन्द और अनन्तवीर्यरूप अनंत चतुष्टयस्वरूप यह भगवान आत्मा है। उसका ध्यान करने से उसमें एकाग्रता होती है। जो अतीन्द्रिय आनन्द आता है, उसका नाम सम्यग्दर्शन है। इस सम्यग्दर्शन पूर्वक आत्मध्यान के प्रताप से धर्मात्मा जीव को बाह्य परीषह-उपसर्गादिक का वेदन नहीं होता।

अतीन्द्रिय आनन्द के स्वाद के समय बाहर की प्रतिकूलता का धर्मीजीव को वेदन नहीं होता है। जब परीषहादिक या क्षुधा-तृषारूप रोग शरीर में उत्पन्न होते हैं, तब धर्मी जीव यह जानता है कि जब शरीर ही मेरा नहीं है तो रोग मेरा कहाँ से होगा? अरे ! पुण्य-पाप तत्त्व भी आस्रवभाव ही हैं, वे मेरे नहीं है। धर्मी को जितना अतीन्द्रिय आनन्द अन्दर वेदन में आता है, उतना उसे परीषह आदि का भी ख्याल नहीं रहता है, स्मरण भी नहीं रहता है। इसी आनन्दमय दशा को संवर-निर्जरा कहते हैं। यदि उसका निमित्त कर्मों पर जाय तो वह द्रव्यनिर्जरा कहलाती है।

व्रत-तप आदि शरीर की क्रिया से संवर-निर्जरा नहीं होती है; क्योंकि यह तो जड़द्रव्य की क्रिया है, अजीवतत्त्व है। शुभाशुभभावों से भी संवर-निर्जरा नहीं होती है; क्योंकि यह भी आस्रवतत्त्व ही है। बाह्य परद्रव्यादि से रहित शुद्ध सत्-चिदानन्दस्वरूप आत्मा के ध्यानरूप अनुभव से संवर-निर्जरा प्रगट होती है।

परद्रव्य की ओर का लक्ष छोड़कर एक निज शुद्धात्मा की तरफ लक्ष जोड़ना, उसको ही ध्येय बनाने का नाम अनुभव है, उससे संवर-निर्जरा प्रगट होती है।

भगवान त्रिलोकीनाथ तीर्थंकरदेव निर्जरा के तीन प्रकार कहते हैं ह्न

1) जब भगवान आत्मा अतीन्द्रिय आनन्द में लीन होता है, सिद्धसमान अपने आनन्द में मशगूल होता है, तब उसके शुद्धि की वृद्धि होती है; उसे भगवान यथार्थ निर्जरा कहते हैं।

2) अनुभव काल में धर्मीजीव को जब अशुद्धि का नाश होता है, तब उसे अशुद्धनिश्चयनय की अपेक्षा निर्जरा कहते हैं।

3) धर्मीजीव को अतीन्द्रिय आनन्द के काल में जड़ कर्मों की अपने आप जो निर्जरा होती है, उसे भगवान सर्वज्ञदेव असद्भूतव्यवहारनय से निर्जरा कहते हैं।

यहाँ इस गाथा में तीन प्रकार के निर्जरा की बात कही है कि धर्मीजीव को आत्मध्यान के प्रताप से परीषहादिक का वेदन नहीं होता और शीघ्र ही संवर-निर्जरा प्रगट होकर कर्म अपने आप ही खिर जाते हैं।

अब 25 वें श्लोक में पूज्यपादस्वामी इस बात को और भी स्पष्ट करते है। जिस उपदेश से अपने आत्मा के हित की दशा प्रगट होती है और पुण्य-पाप का बंध नहीं होता है, उस उपदेश को हितोपदेश कहते है; अन्य समस्त उपदेश हितकर तो है ही नहीं, लेकिन विपरीत भी है और संसार मार्ग में परिभ्रमण कराने हेतु निमित्त हैं।

**कटस्य कर्त्ताहमिति सम्बन्धः स्याद्द्वयोर्द्वयोः।**
**ध्यानं ध्येय यदात्मैव सम्बन्धः कीदृशस्तदा ।।25।।**

मैं चटाई का कर्त्ता हूँ ह्न इसप्रकार अलग-अलग दो पदार्थों के बीच सम्बन्ध हो सकता है; पर जब आत्मा ही ध्यान और ध्येयरूप हो जाए तब सम्बन्ध कैसा ?

अब इस श्लोक में आचार्य पूज्यपादस्वामी दृष्टान्त देकर समझाते हैं कि 'मैं चटाई का कर्त्ता हूँ' इसमें चटाई और मैं दोनों भिन्न-भिन्न वस्तुयें हैं। मेरे लिये मेरा आत्मा ध्येय है और आत्मा ही ध्याता है - ये दो अभिन्न हैं। दो भिन्न वस्तुओं में ही संयोग हो सकता है, अभिन्न वस्तुओं में संयोग नहीं होता।

पुण्य-पाप आदि शुभ-अशुभ भाव धर्मी का ध्येय नहीं है, धर्मी का ध्येय आत्मा है और ध्यान, ध्याता भी आत्मा ही है। भगवान आत्मा शुद्ध, अखण्ड, अनाकुल, आनन्द का रसपिण्ड है; उसका विकार रहित होकर शुद्ध-निर्मल अवस्था द्वारा ध्यान करनेवाला भी आत्मा है तथा ध्येय और ध्याता भी आत्मा ही है। आत्मा में ध्यान, ध्याता और ध्येय का भेद नहीं होता। भेद का विकल्प उठे; वह तो राग है, पुण्यबंध का कारण है। वह संवर-निर्जरा का कारण नहीं है। जो बुद्धिमान शुभाशुभ भावों पर दृष्टि रखते हैं, उसको ही ध्येय बनाते हैं; वे तो अनादि मिथ्यादृष्टि हैं; लेकिन जो जीव अपने शुद्ध, अखण्ड, आनन्दस्वरूप, एकरूप आत्मा को ही ध्येय बनाकर ध्यान करता है ह्न उसे क्या कहें ? एक आत्मा ही उस जीव के लिये ध्येय, ध्याता और ध्यानस्वरूप एकरूप है, भेदरूप नहीं।

दो वस्तुओं के बीच नियम से संयोग संबंध रहता है, एक का एक वस्तु में संयोग नहीं है। चटाई और उसका कर्त्ता मैं ह्न यह तो दो वस्तुओं का संयोग है; लेकिन ध्याता मैं (आत्मा) और ध्येय भी आत्मा; उसका मैं ध्यान करूँ तो उसमें संयोग संबंध नहीं है।

अपने हित का कर्त्ता और करण (साधन) आप ही है। यह भगवान का उपदेश है, हितकर है। पुण्य-पाप भावों से आत्मा का हित होता है ह्न ऐसा उपदेश है; वह तो भगवान के उपदेश से विरुद्ध उपदेश है, अहितकर है। **(क्रमशः)**







## मोक्ष और मोक्ष का उपाय

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार की पाँचवीं गाथा पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरसगर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलतः इसप्रकार है -

**अत्तागमतच्चाणं सद्दहणादो हवेइ सम्मत्तं ।**
**ववगयअसेसदोसो सयलगुणप्पा हवे अत्तो ।।५।।**

आप्त, आगम और तत्त्वों की श्रद्धा से सम्यक्त्व होता है; जिसके अशेष (समस्त) दोष दूर हुए हैं - ऐसा सकल गुणमय पुरुष आप्त है।

**(गतांक से आगे ....)**

इस पंचम गाथा में ऐसा कहा है की अरहन्त भगवान की श्रद्धा व्यवहार सम्यक्त्व है, वह पुण्य है। धर्म तो आत्मस्वभाव की पहचान से है। आत्मा के स्वभाव को पहचानने के लिये सर्वज्ञ को पहचानना चाहिये, तदनुसार सर्वज्ञ कथित तत्त्वों को तथा आगम को भी पहचानना योग्य है।

अब पाँचवीं गाथा की टीका पूर्ण करते हुये श्लोक कहते हैं -

(आर्या)

**भवभयभेदिनि भगवति भवतः किं भक्तिरत्र न समस्ति।**
**तर्हि भवाम्बुधिमध्यग्राहमुखान्तर्गतो भवसि ।।१२।।**

भव के भय का भेदन करनेवाले इन भगवान के प्रति यदि तुझे भक्ति नहीं है तो तू भवसमुद्र के मध्य में रहनेवाले मगर के मुख में है। भगवान भव-भय के भेदक हैं। उन्होंने स्वयं तो अपने भवों को भेद ही डाला है और निमित्तरूप से दूसरों के भव को भी छेदनेवाले हैं। भगवान ने जैसा कहा है; उसे पहिचानकर, उसकी श्रद्धा-ज्ञान से जिसने अपने भव का नाश किया, उसके भव-भय भेदने में भगवान निमित्त हैं। ऐसे श्री सर्वज्ञ परमात्मा को पहिचानकर उनके प्रति यदि तुझे भक्ति नहीं तो हे जीव ! तू भवसमुद्र के मध्य में निवास करनेवाले मगर के मुख में है। चौरासी के अवतारूपी

मगरमच्छ तुझे निगल लेंगे अर्थात् तेरा अवतार मिटेगा नहीं।

एक तरफ तो भव-भय रहित होने की बात की और उसके समक्ष भव-समुद्र की बात की। जो सर्वज्ञ भगवान को पहिचानकर, उनके प्रति भक्तिपूर्वक, सर्वज्ञ ने जैसा कहा है, उसे पहिचाने तो उसके भव-भय का छेद हो जाता है। भगवान किसी के ऊपर प्रसन्न होकर किसी का भव-भेदन नहीं करते; परन्तु जिसने आत्मा की श्रद्धा-ज्ञान करके अपने आत्मा की प्रसन्नता प्रकट की; तब आरोप से कहा जाता है कि भगवान मेरे ऊपर प्रसन्न हुए। भगवानकथित तत्त्वों को जो पहिचानता नहीं, उसे चौरासी के भ्रमण का अन्त नहीं आता। पुण्य-पाप से पार चैतन्यस्वभाव को पहिचानना ही भगवान की परमार्थ भक्ति है; यदि ऐसी भक्ति करे तो भव का नाश हो।

अब भव का नाश कराने में निमित्त भगवान जिनेन्द्र देव कैसे हैं, उसे आगामी गाथा द्वारा बताते हैं। गाथा मूलत: इसप्रकार है -

**छुहतण्हभीरुरोसो रागो मोहो चिंता जरा रुजा मिच्चू।**
**सेदं खेद मदो रइ विम्हियणिद्दा जणुव्वेगो ।।६।।**

क्षुधा, तृषा, भय, रोष, राग, मोह, चिन्ता, जरा, रोग, मृत्यु, स्वेद, खेद, मद, रति, विस्मय, निद्रा, जन्म और उद्वेग - ये अठारह दोष अरहंत भगवान में नहीं होते।

**(1) क्षुधा –** अर्हन्त परमात्मा के क्षुधा नहीं होती तथा आहार भी नहीं होता। अष्ट वर्ष की उम्र में सर्वज्ञता प्रकट हो, तत्पश्चात् करोड़ों वर्षों तक शरीर-स्थिति रहे तो भी भूख नहीं लगती। जिनको एकसमय में तीनकाल तीनलोक के जानने का ज्ञान सामर्थ्य प्रकट हुआ, उसको क्षुधा नहीं लगती, उनका शरीर आहार के बिना ही परमौदारिक स्फटिक जैसा टिका रहता है।

**(2) तृषा –** अर्हन्त परमात्मा के पानी पीने की इच्छा नहीं होती। तृषा भी नहीं होती और पानी भी नहीं पीते। महावीर परमात्मा इससमय सिद्ध दशा में हैं, किन्तु ढाई हजार वर्ष पहले वे यहीं अर्हन्तरूप में विराजमान थे और इससमय भी महाविदेह क्षेत्र में सीमन्धर परमात्मा अर्हन्तरूप में विराजमान हैं। लाखों वर्ष पहले उनको केवलज्ञान हुआ, परन्तु क्षुधा-तृषा उनको नहीं होती। भोजन-पान के बिना लाखों-





करोड़ों वर्षों तक उनका शरीर ज्यों का त्यों टिका रहेगा।

**(3) भय –** सर्वज्ञ भगवान के ज्ञान में तीनकाल तीनलोक ज्ञात हो गये हैं, अत: उन्हें भय किसका ?

**(4) रोष –** रोष अर्थात् क्रोध भी सर्वज्ञ भगवान के नहीं होता।

**(5) राग –** भगवान के राग नहीं होता तथा उपदेश करने की इच्छा भी नहीं होती। हाँ, सहजरूप से वाणी खिरती है, परन्तु इच्छा का अभाव है। विहार भी सहज ही होता है। विहार करूँ; ऐसी रागयुक्त इच्छा नहीं; क्योंकि राग का अभाव तो बारहवें गुणस्थान में ही हो चुका है।

**(6) मोह –** भगवान के मोह नहीं होता; क्योंकि मोहाभाव के बाद ही तो सर्वज्ञता प्रकट हुई है।

**(7) चिन्ता –** भगवान के चिन्ता नहीं होती; क्योंकि जहाँ मोह सर्वथा टल गया और तीनकाल, तीनलोक ज्ञान में प्रतिभासित हो गए; वहाँ चिन्ता किसकी हो सकती है ?

**(8) जरा** - केवलज्ञान होने के बाद लाखों-करोड़ों वर्ष तक देह टिका रहता है, तथापि वृद्धावस्था नहीं आती अर्थात् शरीर में झुर्रियाँ आदि भी नहीं पड़ती।

**(9) रोग –** भगवान के शरीर में रोग नहीं होता और दवा भी नहीं होती। भगवान की आत्मा तो रोगरहित है ही तथा शरीर भी रोगरहित है।

**(10) मृत्यु –** भगवान का शरीर त्याग होने पर मोक्ष होता है, किन्तु पुन: नवीन शरीर धारण करना नहीं पड़ता अर्थात् भगवान को मृत्यु नहीं है।

**(11) स्वेद –** पसीना; भगवान इच्छारहित विहार करते हैं, उनको थकान नहीं होती, शरीर में पसीना नहीं निकलता। आत्मा में अनन्तवीर्य प्रकट होने पर निमित्तरूप से शरीर में भी थकावट या पसीना नहीं होता, भगवान जमीन पर विहार न करके आकाश में विहार करते हैं।

**(12) खेद –** भगवान को खेद नहीं होता।

**(13) मद –** अभिमान भगवान के नहीं होता। ज्ञान, पूजा, कुल, जाति, बल, ऋद्धि, तप और शरीर - ये आठों ही मद अज्ञानी के ही होते हैं। जब ज्ञानी

जीवों के भी ये मद नहीं होते तो अरहन्त भगवान के कैसे हो सकते हैं ?

**(14) रति –** अर्थात् राग-प्रीति; भगवान को किसी के ऊपर रति नहीं होती।

**(15) विस्मय –** आश्चर्य; जहाँ पूर्ण ज्ञान हो गया है अर्थात् भगवान के ज्ञान में कुछ नवीन है ही नहीं तो आश्चर्य किसका ? नवीनता लगे तो आश्चर्य हो; किन्तु सर्वज्ञ के ज्ञान में समस्त लोकालोक ज्ञात हो गये हैं तो अब आश्चर्य किसका हो ?

**(16) निद्रा –** त्रिकाल और त्रिलोक को जाननेवाला चैतन्यसूर्य उदय हुआ अर्थात् चैतन्य जागृत हो गया फिर उसमें निद्रा कैसी ? अष्टम गुणस्थान से ही निद्रा का अभाव हो जाता है। स्वरूप की जागृति का भाव प्रकट होते ही प्रमादरूप निद्रा नहीं होती।

**(17) जन्म –** भगवान दुबारा अवतार धारण नहीं करते। मुक्त होने के बाद जगत के जीवों के कल्याण के लिये अवतार धारण करें, ऐसे भगवान नहीं होते।

**(18) उद्वेग –** भगवान के उद्वेग नहीं होता।

ऐसे अठारह दोष भगवान के नहीं होते। भगवान के गुण आगामी गाथा में कहेंगे।

### आराध्य तो चैतन्यस्वभावी निजात्मतत्त्व ही है !

भेदविज्ञान मात्र दो वस्तुओं के बीच भेद जानने का नाम नहीं है। षट्द्रव्यमयी सम्पूर्ण लोक को स्व और पर ह्न इन दो भागों में विभक्त कर पर से भिन्न स्व में एकत्व स्थापित करना ही सच्चा भेदविज्ञान है।

अनित्य, अशरण और अशुचि जड़ शरीर तो पर है ही; अपनी ही आत्मा में उत्पन्न मोह-राग-द्वेषरूप अशुचि आस्रवभाव भी पर ही हैं। जड़ शरीर एवं पुण्य-पापरूप शुभाशुभभाव तो दूर, गहराई में जाकर विचार करें तो आत्मा के आश्रय से आत्मा में ही उत्पन्न होनेवाले संवर, निर्जरा, मोक्षरूप वीतरागभाव (शुद्धभाव) भी पर्याय होने से पर की सीमा में ही आते हैं; स्व तो पर और पर्याय से भिन्न एकमात्र ज्ञानानन्दस्वभावी ध्रुव आत्मतत्त्व ही है।

सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र के मोक्षमार्गरूप निर्मलभाव भी ध्येय नहीं हैं, श्रद्धेय नहीं हैं, परमज्ञेय भी नहीं हैं; आराध्य भी नहीं है। आराध्य तो अनन्तगुणों का अखण्ड पिण्ड एक चैतन्यस्वभावी निजात्मतत्त्व ही है।

**बारहभावना : एक अनुशीलन, पृष्ठ 122**







## शक्तियों का संग्रहालय : भगवान आत्मा

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम समयसार नामक ग्रन्थाधिराज पर परमपूज्य आचार्य अमृतचन्द्रदेव ने 'आत्मख्याति' नामक संस्कृत टीका लिखी है। उसके अन्त में परिशिष्ट के रूप में अनेकान्त का विस्तृत वर्णन करते हुये आत्मा की 47 शक्तियों का वर्णन किया है, साथ ही अनेक कलश भी लिखे हैं। उन पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी ने समय-समय पर अतिमहत्त्वपूर्ण प्रवचन किये हैं, जो पाठकों के लाभार्थ क्रमश: प्रस्तुत हैं।

**(गतांक से आगे .....)**

**अब 269 वें कलश में आत्मस्वभाव को प्रगट करने का उपाय बताते हैं-**

**( वसंततिलका )**

**स्याद्वाददीपितलसन्महसि प्रकाशे शुद्धस्वभावमहिमन्युदितेमयीति।**
**किं बंधमोक्षपथपातिभिरन्यभावैर्नित्योदयः परमय स्फुरतु स्वभावः।।**

**( वसंततिलका )**

**महिमा उदित शुद्धस्वभाव की नित,**
**स्याद्वाददीपित लसत् सद्ज्ञान में जब।**
**तब बंध मोक्ष मग में आपतित भावों,**
**से क्या प्रयोजन है तुम ही बताओ।।**

**जिसका तेज स्याद्वाद द्वारा प्रदीप्त होने से जगमगाहट करता है और जिसमें शुद्ध स्वभावरूप महिमा है - ऐसा यह ज्ञानप्रकाश जहाँ मुझमें उदय को प्राप्त हुआ है, वहाँ बंध-मोक्ष के मार्ग में पड़नेवाले अन्य भावों से मुझे क्या प्रयोजन है ? मुझे तो मेरा नित्य उदित रहनेवाला अनन्तचतुष्टयरूप स्वभाव ही स्फुरायमान हो।**

**स्याद्वाद से यथार्थ आत्मज्ञान होने का फल पूर्ण आत्मा का प्रगट होना है; इसलिए मोक्ष का इच्छुक पुरुष यही प्रार्थना करता है कि मेरा पूर्ण स्वभाव आत्मा मुझे प्रगट हो; बन्ध-मोक्षमार्ग में पड़नेवाले अन्य भावों से मुझे क्या काम है ?**

**आचार्यदेव यहाँ यह भावना भाते हैं कि जहाँ ऐसी अन्तर्दृष्टि हुई कि मैं पुण्य-पाप के विकल्प से रहित ज्ञानानन्दस्वभावी हूँ, वहाँ अन्तर में चैतन्य के**

तेज का जगमगाता प्रकाशपुंज प्रगट हो गया है, भगवान आत्मा अनुभव में आ गया है। अब हमें अन्य सांसारिक शुद्ध वस्तुओं से कोई प्रयोजन नहीं है ?

अहा ! अपनी यह चैतन्यवस्तु तो अनादि से है; किन्तु उसे भूलकर अनादिकाल से 'चारगति' में भ्रमण कर दु:खी हो रहा है। अहा ! अन्तर में यह स्वयं आनन्द का नाथ प्रभुरूप से विराजता है। उसमें अन्तर एकाग्र होने पर सम्यग्ज्ञान का तेज प्रगट होता है। शुद्ध-बुद्ध भगवान आत्मा जगमगाता हुआ प्रकाशित होता है। इस सम्यग्ज्ञान का प्रकाश होने पर, पर की महिमा मिटकर निज स्वभाव की महिमा प्रगट होती है। सन्त कहते हैं कि - भाई ! जिसतरह करोंत ( आरी ) से लकड़ी के दो फाड़ ( टुकड़े ) जुदे-जुदे करते हैं, वैसे ही भेदज्ञान से स्व और पर को जुदा कर ! उसमें ज्ञानानन्दस्वरूप तो मैं हूँ और जड़-देहादि मैं नहीं हूँ। इसप्रकार दोनों को भिन्न कर। अहो ! आचार्य भगवान अपनी बात करके जगत के जीवों को समझाते हैं कि मुझे राग से भिन्न पड़कर स्वभाव में एकाग्र होने पर जगमगाता ज्ञानप्रकाश उदय हुआ है; अत: अब मुझे अन्य भावों से क्या प्रयोजन ? अहाहा ...! मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चारित्र बन्धमार्ग है तथा सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र मोक्षमार्ग है; किन्तु इन बन्ध-मोक्ष के विकल्पों से मुझे क्या काम है ? हम तो अपने स्वरूप के निजानन्द रस में रम रहे हैं। हमें अब अनन्तज्ञान, अनन्तदर्शन, अनन्तसुख, अनन्तवीर्य - ऐसी अनन्त चतुष्टय की दशा प्रगट होओ। हमें अन्य कुछ भी नहीं चाहिए, हमारी आत्मा पूर्ण ज्ञानानन्दस्वभावी है। उस स्वभाव की पूर्ण व्यक्तता हमें हो, बस ! हमारी यही एक भावना है कि भव का अभाव होकर हमारी निज-निधि हमें प्राप्त हो।

'यद्यपि नयों के द्वारा आत्मा साधित होता है; तथापि यदि नयों पर ही दृष्टि रहे तो नयों में तो परस्पर विरोध भी है; इसलिए अब मैं नयों का विरोध मिटाकर आत्मा का अनुभव करता हूँ। इसी अर्थ को 270 वें कलश में कहते हैं -

( वसंततिलका )

चित्रात्मशक्तिसमुदायमयोऽयमात्मासद्य:प्रणश्यति नयेक्षणखंड्यमान:।
तस्मादखंडमनिराकृतखंडमेकमेकांतशांतमचलं चिदहं महोऽस्मि ।।

( वसंततिलका )

निज शक्तियों का समुदाय आतम,
विनष्ट होता नयदृष्टियों से।





खण्ड-खण्ड होकर खण्डित नहीं मैं,
एकान्त, शान्त, चिन्मात्र अखण्ड हूँ मैं।।

अनेक प्रकार की निज शक्तियों का समुदायमय यह आत्मा नयों की दृष्टि से खण्ड-खण्डरूप किये जाने पर तत्काल नाश को प्राप्त होता है; इसलिए मैं ऐसा अनुभव करता हूँ कि - जिसमें से खण्डों को निराकृत नहीं किया गया है; तथापि जो अखण्ड है, एक है, एकान्त शान्त है ( अर्थात् जिसमें कर्मोदय का लेशमात्र भी नहीं है - ऐसा अत्यन्त शांत भावमय है ) और अचल है ( अर्थात् कर्मोदय से चलायमान च्युत नहीं होता ) ऐसा चैतन्यमात्र तेज मैं हूँ।

आत्मा में अनेक शक्तियाँ हैं और एक-एक शक्ति का ग्राहक एक-एक नय है; इसलिए यदि नयों की एकान्तदृष्टि से देखा जाए तो आत्मा का खण्ड-खण्ड होकर नाश हो जाये; इसलिये स्याद्वादी नयों का विरोध दूर करके चैतन्यमात्र वस्तु को अनेकशक्ति समूहरूप, सामान्यविशेषरूप, सर्वशक्तिमय एकज्ञानमात्र अनुभव करता है। ऐसा ही वस्तु का स्वरूप है, इसमें विरोध नहीं है।

अनन्त शक्तियों का समुदायमय भगवान आत्मा जीवत्व, चिति, दृशि, ज्ञान, सुख, वीर्य, प्रभुत्व, विभुत्व, सर्वदर्शित्व आदि अनंत गुण एवं शक्तियों का अखण्ड एक चैतन्यतत्त्व है। यद्यपि समयसार में संक्षेप में 47 शक्तियों का ही वर्णन किया है; परन्तु आत्मा वस्तुत: अनन्त गुण एवं अनन्त शक्तियों का समुदायमय वस्तु है।

भाई ! यह तो अमृत से भरा अलौकिक कलश काव्य है। जिन्हें संसार का दु:ख दूरकर अनाकुल आनन्द में रहना हो, उनके लिए यह अलौकिक बात है। योगसार ग्रन्थ में भी कहा है - भयभीत है यदि चतुर्गति से त्याग दे परभाव को।

देखो, अज्ञानी की दृष्टि में अपनी चैतन्यवस्तु गायब है, उसकी प्राप्ति कैसे हो - यह बात चल रही है। यहाँ कहते हैं कि - आत्मा वस्तुरूप से अभेद, एक है। यद्यपि उसमें अनन्त गुण हैं; परन्तु अनन्त गुणमय वस्तु अभेद, एक है। ऐसे अनन्तगुणमय आत्मा को एक-एक नय से देखने पर अखण्ड आत्मवस्तु खण्ड-खण्ड हो जाती है अर्थात् पूर्ण आत्मवस्तु दृष्टि में से खो जाती है। ज्ञान व दृष्टि में सम्पूर्ण आत्मवस्तु की प्राप्ति नहीं होती, अभेद वस्तु लक्ष्य में नहीं आती। आत्मा को भेद से दृष्टि में लेने से विकल्प खड़े होते हैं, अभेद लक्ष्य में नहीं आता। अहा ! पर से व राग से आत्मा की प्राप्ति होना तो दूर रहो, आत्मा को उसके एक-एक गुण से देखने पर भी आत्मा की प्राप्ति नहीं होती।(क्रमश:)

# ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

## निमित्त-उपादान

**प्रश्न :** एक वस्तु दूसरी वस्तु की नहीं, अत: उसका अन्य वस्तु के साथ कोई सम्बन्ध नहीं, फिर शास्त्र में निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध का कथन क्यों ?

**उत्तर :** यह तो नैमित्तिकभाव अपने से परिणमता है, उससमय निमित्त कौन था, उसका ज्ञान कराने को शास्त्र में कथन आता है। निमित्त ह्न निमित्त में और नैमित्तिक ह्न नैमित्तिक में परिणमन करता है; एक वस्तु दूसरी वस्तु में कुछ नहीं करती, दोनों वस्तुयें भिन्न ही है। एक वस्तु दूसरी वस्तु को करे भी कैसे ?

**प्रश्न :** जब निमित्त वास्तविक कारण नहीं है, तो फिर उसे कारण कहा ही क्यों जाता है ?

**उत्तर :** जिसे निमित्त कहा जाता है, उस पदार्थ में उसप्रकार की ह्न निमित्तरूप होने की योग्यता है; इसलिए अन्य पदार्थों से उसे भिन्न पहिचानने के लिए उसकी 'निमित्तकारण' संज्ञा दी गई है। ज्ञान का स्वभाव स्व-परप्रकाशक है, इसलिये वह पर को भी जानता है और साथ ही पर में निमित्तपने की योग्यता है ह्न यह भी जानता है।

**प्रश्न :** उपादान को अनुकूल निमित्त है और निमित्त को अनुरूप उपादान है; फिर भी एक-दूसरे में कुछ करते नहीं ह्न ऐसी स्थिति में निमित्त का क्या काम है ?

**उत्तर :** घड़ा बनने में हलवाई निमित्त नहीं होता, कुंभकार ही होता है ह्न ऐसा बतलाना प्रयोजन है।

**प्रश्न :** घड़ा कुंभकार तो नहीं बनाता, तो क्या मृतिका से भी नहीं बनता ?

**उत्तर :** घड़ा घड़े की पर्याय के षट्कारक से स्वतंत्रतया बनता है, मिट्टी द्रव्य से भी नहीं; मिट्टी द्रव्य तो सदाकाल विद्यमान है। घड़ा, रामपात्र आदि पर्यायें नई-नई उत्पन्न होती हैं और वे पर्यायें अपने षट्कारक से स्वतंत्र ही होती हैं।





समाचार दर्शन –

## अष्टाह्निका महापर्व हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न

1. **जयपुर (राज.) :** यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में अष्टाह्निका पर्व के शुभअवसर पर दिनांक 25 से 2 जुलाई, 2004 तक सिद्धचक्रमहामण्डल विधान का आयोजन किया गया। विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री द्वारा सम्पन्न कराये गये।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के विधान की जयमाला पर मार्मिक प्रवचन हुए एवं रात्रि में पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री के भावदीपिका पर प्रवचन हुये।

2. **इन्दौर (म.प्र.) :** यहाँ श्री पंच बालयती एवं विहरमान 20 तीर्थंकर जिनालय साधनानगर में पर्व के अवसर पर सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन किया गया।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य विधानाचार्य बाल ब्र.जतीशचन्दजी शास्त्री, सनावद के निर्देशन में पण्डित ऋषभकुमारजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ़, पण्डित प्रशांतजी मोहरे सोलापुर एवं पण्डित प्रयंकजी शास्त्री रहली ने सम्पन्न कराये ।

दोनों समय प्रारंभ के चार दिन पण्डित अनिलजी पाटोदी, बड़नगर एवं अन्तिम चार दिन पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री, भिण्ड़ के समयसार एवं मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचन हुए।

सभी कार्य पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा के निर्देशन में सम्पन्न हुए। **ह्न मनोहरलाल काला**

3. **मुंबई (महा.) :** श्री दिग. जैन मुमुक्षु समाज, बृहन्मुंबई द्वारा अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर मुंबई के विभिन्न उपनगरों में व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया; जिसमें प्रतिदिन प्रवचन, कक्षा एवं तत्त्वचर्चा आदि के माध्यम से समाज में निम्न विद्वानों द्वारा विशेष धर्मप्रभावना हुई ह्न

**श्री सीमंधर जिनालय में** पण्डित रमेशचन्दजी शास्त्री जयपुर, **दादर में** पण्डित अरूणकुमारजी मोदी सागर, **बोरीवली में** पण्डित कस्तूरचंदजी जैन विदिशा, **भायंदर में** पण्डित कमलकुमारजी जैन पिड़ावा, **भिवंडी में** पण्डित चन्दुभाईजी मेहता फतेपुर, **दहीसर में** पण्डित हितेशजी शास्त्री चिचोली, **मलाड़ (वेस्ट) में** पण्डित विपिनकुमारजी शास्त्री, **मलाड़ (ईस्ट) में** पण्डित सुदीपजी शास्त्री बीना एवं पण्डित अनिलजी शास्त्री गोरेगांव के प्रवचन हुए।

4. **टीकमगढ़ (म.प्र.) :** यहाँ श्री दिग. जैन सीमन्धर जिनालय में पर्व के अवसर पर पण्डित कोमलचन्दजी जैन, टड़ा के तीनों समय मार्मिक प्रवचन हुए। **ह्न सुरेश जैन, मंत्री**

5. **जबलपुर (म.प्र.) :** यहाँ श्री महावीर दि. जिनमन्दिर, बड़ा फुहारा में पर्व के अवसर पर पण्डित देवेन्द्रकुमारजी जैन, बिजौलिया के नियमसार परमागम पर मार्मिक प्रवचन हुए।

इस अवसर पर श्री नियमसार महामण्डल विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित विरागजी शास्त्री, पण्डित मनोजजी एवं पण्डित श्रेणिकजी ने सम्पन्न कराये । **– श्रेयांस शास्त्री**

6. **गोहद (म.प्र.) :** यहाँ श्री दिगम्बर जैन मन्दिर में अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव एवं सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित अभिनवजी शास्त्री मैनपुरी, पण्डित संदीपजी शास्त्री गोहद, पण्डित अजितजी जैन ग्वालियर एवं पण्डित राजेन्द्रजी पाटील एलिमुन्नोली द्वारा कक्षा, प्रवचन, सांस्कृतिक

कार्यक्रम आदि के माध्यम से समाज में धर्मप्रभावना हुई।

विधि-विधान के कार्य पण्डित धनसिंहजी 'ज्ञायक' एवं चेतनजी शास्त्री पिड़ावा ने सम्पन्न कराये।

**7. शिरडशहापुर (महा.) :** यहाँ श्री नेमिनाथ दि. जैन मन्दिर में अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर पण्डित प्रशांतकुमारजी शास्त्री के दोनों समय समयसार का सार एवं अष्टपाहुड पर सारगर्भित प्रवचन हुए। सायंकाल बालकक्षा एवं जिनेन्द्रभक्ति के पश्चात् नाभिराजजी महाजन द्वारा प्रश्नमंच का आयोजन किया गया। **ह्न सुरेश काले**

**8. लूणदा (राज.) :** यहाँ श्री दि. जैन मन्दिर में पर्व के अवसर पर पण्डित लक्ष्मीचन्दजी जैन डूंगरपुर एवं पण्डित चन्दुभाई जैन कुशलगढ़ के तीनों समय मोक्षमार्गप्रकाशक पर सारगर्भित प्रवचन हुए। रात्रि में जिनेन्द्रभक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम भी कराये गये। **ह्न ललित जैन**

**9. सोलापुर (महा.) :** यहाँ श्री आदिनाथ दि. जैन मन्दिर में पर्व के अवसर पर श्री तीनलोक महामण्डल विधान का आयोजन हुआ। विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित विक्रान्तजी शहा सोलापुर ने सम्पन्न कराये। प्रतिदिन दोनों समय पण्डित राजकुमारजी आलंदकर एवं पण्डित विक्रान्तजी शहा के प्रवचनों का लाभ मिला। **ह्न प्रशान्त मोहरे**

**10. छपरौली (उ.प्र.):** यहाँ श्री दि. जैन मन्दिर में पर्व के अवसर पर पण्डित चैतन्यजी सातपुते के दोनों समय मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचन हुए। पण्डित दीपकजी डांगे ने कक्षा ली।

**11. खतौली (उ.प्र.) :** यहाँ श्री दि. जैन मंदिर में सिद्धचक्र मण्डल विधान का आयोजन किया गया। विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित ऋषभकुमारजी शास्त्री ललितपुर ने सम्पन्न कराये। आपके दोनों समय प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित सोनूजी शास्त्री एवं पण्डित कल्पेन्द्रजी का लाभ भी समाज को मिला।

**12. मेरठ (महा.):** यहाँ श्री दि. जैन मन्दिर में पर्व के अवसर पर श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन किया गया। विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित सुनीलकुमारजी बेलोकर, सुल्तानपुर ने सम्पन्न कराये ।

इस अवसर पर पण्डित सुबोधचन्दजी सिंघई, सिवनी के प्रारंभ के चार दिन दोनों समय सारगर्भित प्रवचन हुए तथा पण्डित मनोजकुमारजी शास्त्री, अभाना के समयसार पर मार्मिक प्रवचन हुए। आपके द्वारा गुणस्थान विवेचन पर कक्षा भी ली गई। पण्डित शाकुलजी जैन द्वारा बालकक्षा का आयोजन किया गया। **ह्न नवनीत जैन**

## पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील द्वारा धर्मप्रभावना

**इण्डी (बिजापुर -कर्ना.) :** यहाँ समाज के विशेष आग्रह पर पधारे श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के उप-प्राचार्य पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, जयपुर द्वारा ग्रीष्मावकाश पर दिनांक 3 से 13 जून, 04 तक प्रात: लघु जैन सि. प्रवेशिका, दोपहर में परमभावप्रकाशक नयचक्र एवं रात्रि में समयसार पर अध्यात्मरसगर्भित मार्मिक प्रवचन हुए।

इसीप्रकार पुणे (महा.) में दि. 28 व 29 मई, 04 को एवं गृहनगर-जयसिंगपुर (महा.) में भी 31 मई से 2 जून, 04 तक आपके विशिष्ट प्रवचनों द्वारा समाज में महती धर्मप्रभावना हुई।





# पूरे देश में शिक्षण शिविरों की धूम

**1. उदयपुर (राज.) :** श्री कुन्दकुन्द वीतराग-विज्ञान शिक्षण समिति, उदयपुर द्वारा जवाहर जैन शिक्षण संस्थान, हिरणमगरी, सैक्टर-11 में दिनांक 13 जून से 20 जून, 2004 तक पंचम बाल संस्कार शिक्षण-शिविर एवं एक सौ सत्तर तीर्थंकर मण्डल विधान का आयोजन किया गया।

शिविर में प्रतिदिन प्रात: 170 तीर्थंकर विधान के उपरान्त दो प्रवचनों में डॉ. योगेशजी शास्त्री अलीगंज, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं पण्डित मनीषजी शास्त्री रहली का लाभ मिला।

दोपहर में बाल कक्षाओं के अतिरिक्त विदुषी राजकुमारी बहन जयपुर द्वारा 'जैसी मति वैसी गति' विषय पर एवं पण्डित मनीषकुमारजी शास्त्री रहली द्वारा क्रमबद्धपर्याय पर कक्षा ली गई।

सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के पश्चात् बालकों के लिये ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। तदुपरान्त दो प्रवचनों में पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर, डॉ. योगेशजी अलीगंज, पण्डित धनसिंहजी 'ज्ञायक' पिड़ावा एवं पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के प्रवचनों का लाभ मिला।

शिविर के सम्पूर्ण कार्य पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा एवं पण्डित महावीरप्रसादजी शास्त्री, उदयपुर के निर्देशन में सम्पन्न हुए।

शिविर में 484 बालकों को उनकी आयु के अनुसार 9 विशेष कक्षाओं में विभाजित किया गया; जिसमें उक्त विद्वानों के अतिरिक्त पण्डित कोमलचन्दजी जैन टड़ा, पण्डित कमलचन्दजी जैन पिड़ावा, पण्डित रीतेशकुमारजी शास्त्री डडूका, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी शास्त्री डडूका, पण्डित हेमन्तकुमारजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित निलयकुमारजी शास्त्री टीकमगढ़, पण्डित आशीषकुमारजी शास्त्री टीकमगढ़, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री खरगापुर, पण्डित जिनेन्द्रकुमारजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित प्रक्षालजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित स्वतंत्रजी शास्त्री जयपुर एवं कु.शिरोमणि जैन उदयपुर द्वारा मनोवैज्ञानिक पद्धति से बालकों में धार्मिक संस्कारों का बीजारोपण किया गया।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित धनसिंहजी 'ज्ञायक' पिड़ावा, पण्डित मनीषकुमारजी शास्त्री पिड़ावा एवं श्री राजेन्द्रजी जैन टीकमगढ़ द्वारा सम्पन्न कराये गये।

**2. नागपुर (महा.) :** श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में श्रीमती शान्ताबाई मनोहरराव सोईतकर परिवार द्वारा दिनांक 5 जून से 13 जून, 04 तक सप्तम बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में शिशु, बाल, युवा एवं प्रौढ़ वर्गों की मराठी एवं हिन्दी भाषा में 9 कक्षाओं के माध्यम से 225 विद्यार्थियों ने लाभ लिया।

विद्वानों में पण्डित राकेशकुमारजी शास्त्री नागपुर, पण्डित आलोकजी शास्त्री कारंजा, पण्डित नन्दकिशोरजी मांगुलकर काटोल, पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री नागपुर, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित अशोकजी मांगुलकर राघौगढ़, पण्डित अभिनवजी शास्त्री मैनपुरी, पण्डित स्वप्निलजी शास्त्री नागपुर एवं पण्डित रवीन्द्रजी काले, कारंजा का कक्षाओं एवं प्रवचनों के माध्यम से लाभ मिला। **ह्न अशोक जैन**

3. **खण्डवा (म.प्र.):** यहाँ श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल के तत्त्वावधान में 12 जून से 18 जून, 04 तक बाल संस्कार शिविर एवं गणधरवलय मण्डल विधान का आयोजन किया गया।

शिविर में पण्डित सुशीलकुमारजी राघौगढ़, पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन एवं पण्डित रमेशचन्दजी बांझल के प्रवचनों का लाभ मिला।

इस अवसर पर पण्डित रितेशजी शास्त्री सनावद, पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित प्रयंककुमारजी शास्त्री रहली, पण्डित सुनीलजी बेलोकर सुलतानपुर एवं पण्डित दीपकजी 'धवल' भोपाल द्वारा के.जी. प्रथम भाग से वीतराग-विज्ञान भाग-1 तक 5 कक्षायें ली गईं।

शिविर में ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री के निर्देशन में श्री गणधरवलय विधान का आयोजन हुआ।

4.**अकोला (महा.) :** स्व. सौ. आशादेवी सोहनलालजी अजमेरा, अकोला की पावन स्मृति में श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन चैत्यालय में दिनांक 11 जून से 17 जून, 2004 तक जैन संस्कार शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में ब्र. यशपालजी जैन, जयपुर द्वारा प्रतिदिन प्रात: एवं रात्रि में जिनधर्मप्रवेशिका तथा दोपहर में गुणस्थान विवेचन के माध्यम से अत्यन्त मार्मिक कक्षायें ली गई।

इसके अतिरिक्त पण्डित अमोलकुमारजी संघई शास्त्री हिंगोली के प्रवचन एवं पण्डित प्रशान्तकुमारजी मोहरे शास्त्री सोलापुर, पण्डित दिग्विजयजी आलमान हेरले, पण्डित शीतलजी आलमान हेरले एवं पण्डित रविन्द्रजी काले, कारंजा की बालकक्षाओं का लाभ मिला।

5. **जयपुर (राज.):** यहाँ श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, बापूनगर में दिनांक 6 जून से 16 जून, 2004 तक बाल संस्कार शिक्षण-शिविर में पण्डित श्रुतेशजी सातपुते शास्त्री एवं पण्डित जितेन्द्रजी राठी शास्त्री द्वारा बालबोध पाठमाला की कक्षायें ली गई।

दिनांक 16 जून को समस्त विद्यार्थियों की परीक्षा लेकर 19 जून को श्री महेन्द्रजी पाटनी की अध्यक्षता में समस्त उत्तीर्ण विद्यार्थियों को पारितोषिक वितरित किये गये।

6. **जयपुर (राज.):** यहाँ श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, जनता कॉलोनी में दिनांक 15 मई से 30 जून, 2004 तक बाल शिक्षण-शिविर में पण्डित राजेशकुमारजी शास्त्री शाहगढ़ ने प्रतिदिन बालकों को नैतिक एवं धार्मिक संस्कार दिये। आपके द्वारा यहाँ साप्ताहिक कक्षा भी चलती है।

दिगम्बर जैन मुलतान मंदिर आदर्शनगर में भी आपके द्वारा सप्ताह में दो दिन बालकों की एवं एक दिन महिलाओं की कक्षा नियमितरूप से संचालित की जाती है।

7. **बांसवाड़ा (राज.) :** यहाँ श्री ज्ञायक चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा दिनांक 2 जून से 6 जून, 2004 तक शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया; जिसमें पण्डित रितेशजी शास्त्री डडूका, पण्डित आकाशजी शास्त्री डडूका एवं पण्डित राकेशजी शास्त्री दाहोद द्वारा कक्षायें ली गई।

प्रात: पण्डित राजकुमारजी शास्त्री के षट्आवश्यक विषय पर प्रवचन हुये तथा रात्रि में पण्डित चेतनकुमारजी शास्त्री कोटा, पण्डित राकेशकुमारजी शास्त्री दाहोद, पण्डित आकाशजी शास्त्री डडूका, पण्डित लक्ष्मीचन्दजी डूंगरपुर, पण्डित नितेशजी शास्त्री अलीगढ़ एवं पण्डित संजयजी शास्त्री अरथूना के प्रवचनों का लाभ समाज को मिला। **– धनपाल ज्ञायक**





8.**अजमेर (राज.) :** यहाँ श्री वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट द्वारा दिनांक 16 जून से 23 जून, 2004 तक बाल संस्कार शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया।

प्रतिदिन दोनों समय पण्डित देवेन्द्रकुमारजी जैन, बिजौलियाँ के प्रवचन हुए। प्रात: नित्यनियम पूजन पण्डित विपिनकुमारजी शास्त्री श्योपुर, पण्डित सुनीलजी 'धवल' भोपाल एवं पण्डित अनुजजी जैन जयपुर द्वारा कराई गई। साथ ही आपके द्वारा विभिन्न कक्षायें भी ली गई।

9. **खनियांधाना (म.प्र.) :** यहाँ श्री नन्दीश्वर दिगम्बर जैन मन्दिर, चेतनबाग में दिनांक 12 से 20 जून, 2004 तक जैन संस्कार शिक्षण-शिविर बाल ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री के निर्देशन एवं बाल ब्र. सुमतप्रकाशजी जैन, खनियांधाना के सानिध्य में सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित महेन्द्रजी शास्त्री इन्दौर, ब्र. अमितजी जैन विदिशा, पण्डित मांगीलालजी कोलारस, पण्डित ताराचन्दजी पटवारी, पण्डित शीतलजी शास्त्री नोगाँव एवं पण्डित संजयजी जैन खनियांधाना के सानिध्य में पूजन, बालकक्षा, प्रौढ़कक्षा, प्रवचन आदि का लाभ समाज को मिला। **ह्न सुनील जैन, सरल**

10. **मौ (म.प्र.) :** यहाँ श्री वीतराग-विज्ञान धर्मप्रभावक ट्रस्ट द्वारा 6 जून से 16 जून, 2004 तक आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में स्थानीय विद्वान ब्र. सत्येन्द्रजी जैन, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी शास्त्री, पण्डित विकासजी शास्त्री, पण्डित पवनजी शास्त्री, पण्डित प्रशान्तजी शास्त्री, पण्डित अजीतजी शास्त्री, पण्डित आशीषजी शास्त्री के अतिरिक्त श्री कान्तिलालजी जैन इन्दौर, पण्डित विनय जैन, पण्डित अभिषेकजी केलवाड़ा द्वारा बालकक्षा, प्रौढ़कक्षा एवं कार्यक्रमों के माध्यम से लाभ मिला।

शिविर में पण्डित कैलाशचन्दजी जैन, अशोकनगरवालों के प्रवचनों का लाभ भी प्राप्त हुआ।

उक्त स्थानों के अतिरिक्त जयपुर में अशोकनगर, मालवीयनगर, आदर्शनगर तथा पार्श्वनाथ चिन्तामणि, दाहोद (गुज.), मंगलायतन-अलीगढ़, कानपुर (उ.प्र.), हिंगोली, आरोन, ग्वालियर, टीकमगढ़ आदि स्थानों पर भी बाल संस्कार शिक्षण-शिविरों का आयोजन किया गया।

## वैराग्य समाचार

1. **जबलपुर निवासी** सेठ सुमेरचन्दजी जैन का 91 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आप जीवन पर्यंत गुरुदेवश्री द्वारा प्ररूपित तत्त्वज्ञान से जुड़े रहे। उनके सान्निध्य में आपने अनेकों यात्रायें की।

2. **छिन्दवाड़ा निवासी** श्री विनोदजी जैन का 46 वर्ष की आयु में दि. 5 जून को देहावसान हो गया। बचपन से ही आपको गुरुदेवश्री का सान्निध्य प्राप्त हुआ। ज्ञातव्य है कि गुरुदेवश्री के प्रवचनसार ग्रन्थ पर हुये गुजराती प्रवचनों का 'दिव्यध्वनिसार' के रूप में हिन्दी अनुवाद आपने ही किया है।

3. महाविद्यालय के स्नातक पण्डित संतोषकुमारजी शास्त्री (सावजी) के पिताश्री देवीचन्दजी जैन, अम्बड़-जालना (महा.) का दिनांक 23 जून, 04 को देहावसान हो गया है।

4.**मेरठ (उ.प्र.)** निवासी श्रीमती गुणमालाजी जैन का देहावसान हो गया है। इस प्रसंग पर आपके सुपुत्र श्री चन्द्रभूषणजी जैन द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को जिनवाणी ध्रुवफण्ड हेतु 1100/-रुपये प्राप्त हुए; एतदर्थ धन्यवाद !

## अमरकंटक के निकटवर्ती 12 स्थानों पर ग्रुप शिविर सम्पन्न

श्री अहिंसा संस्कार समिति के तत्त्वावधान में अमरकंटक (म.प्र.) के निकटवर्ती शहडोल, अनूपपुर, उमरिया, कटनी एवं छत्तीसगढ़ के बिलासपुर एवं कोरबा जिलों के 12 विभिन्न स्थानों पर दिनांक 15 जून से 23 जून, 2004 तक विशाल धार्मिक ग्रुप शिविर सानन्द सम्पन्न हुआ।

छह जिलों के 12 स्थानों पर निम्नानुसार विद्वानों ने समाज को लाभान्वित किया ह्न

1) **शहडोल :** पण्डित अभय शास्त्री, खडैरी 2) **बडगाँव :** पण्डित जितेन्द्र शास्त्री, खडैरी 3) **उमरिया :** पण्डित जितेन्द्र शास्त्री, सिंगोडी 4) **जैतहरी :** पण्डित आदित्य शास्त्री, खुरई 5) **पेन्ड्रा रोड (गोरिल्ला) :** पण्डित सचिन्द्र शास्त्री, गढ़ाकोटा 6) **पेन्ड्रा :** पण्डित प्रवेश शास्त्री, करेली 7) **बिजुरी :** पण्डित प्रमेश शास्त्री, जबेरा 8) **मनेन्द्रगढ़ :** पण्डित भानु शास्त्री, खडैरी 9) **चिरमिरी (छोटी बजरीया):** पण्डित अजीत शास्त्री, मौ 10)**चिरमिरी (हल्दीवाड़ी) :** पण्डित आशीष शास्त्री, मौ 11) **जनकपुर :** पण्डित विमोश शास्त्री, खडैरी 12) **व्यवहारी:** पण्डित चेतन शास्त्री खडैरी एवं पण्डित नितिन शास्त्री, खडैरी द्वारा महती धर्मप्रभावना हुई।

शिविर में बालकक्षा में अहिंसा पाठमाला, प्रौढ़कक्षा में छहढ़ाला, भक्तामर स्तोत्र, तत्त्वार्थसूत्र एवं प्रवचनों में रत्नकरण्ड श्रावकाचार, क्रमबद्धपर्याय, नयचक्र, अहिंसा, शाकाहार आदि विविध विषयों पर तीन-तीन समय कक्षा एवं प्रवचनादि हुये। शिविर में मुख्य आकर्षण पूजन प्रशिक्षण रहा; जिसके द्वारा लगभग 700 बालकों ने प्रक्षाल, अष्टद्रव्य से पूजन विधि आदि की शिक्षा प्राप्त की।

शिविर में प्रवचन, पूजन, कक्षा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों से लगभग 1050 विद्यार्थी एवं 1500 भाई-बहिन लाभान्वित हुए। सात स्थानों पर नियमित पाठशालायें प्रारंभ की गई। अनेकों मुमुक्षुओं ने स्वाध्याय, रात्रिभोजन-जमीकंद त्याग, देवदर्शन आदि की प्रतिज्ञायें ली। **ह्न अभिषेक जैन, रहली**

## सत्ताईसवाँ बृहद् आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर

**रविवार, 8 अगस्त से मंगलवार, 17 अगस्त, 2004 तक**

श्री कुन्दकुन्द कहान दिग. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में रविवार, दिनांक 8 अगस्त से मंगलवार, दिनांक 17 अगस्त, 2004 तक बृहद् आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

शिविर में अध्यात्म जगत के प्रसिद्ध प्रवक्ता बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' कोटा, डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर, डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर, ब्र.यशपालजी जैन बेलगाँव, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन जबलपुर, पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित देवेन्द्रकुमारजी जैन बिजौलिया, पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित मनीषकुमारजी शास्त्री रहली आदि अनेक विद्वानों का प्रवचन, कक्षाओं एवं तत्त्वचर्चा के माध्यम से लाभ मिलेगा।

शिविर में सम्पूर्ण कार्यक्रम पण्डित ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा इन्दौर एवं श्री अमृतभाई मेहता फतेपुर के कुशल निर्देशन में सम्पन्न होंगे।

इस मांगलिक प्रसंग पर आप सभी को धर्मलाभ लेने हेतु हमारा हार्दिक आमंत्रण है।